RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · MARCH 2021 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

Industrial cum Educational Tour to Shimla,

Tecnia Institute of Advanced Studies organized Industrial cum Educational tour from 23rd March –27th March 2021, for BAJMC students to Shimla. Students of BAJMC program participated in this tour along with three faculty members

All students who participated in the Industrial Cum Educational trip gathered at the college premises at 9:00 PM on 23rd March 2021. The students boarded the bus in which their seating & travelling arrangements had been made. The bus departed for the destination at 10:00 PM. Overnight travel to Shimla. This kind of activity develops the Journalistic qualities like Punctuality of Time, Co-ordination of activities and Integrated Communication among the students and the faculty members.

The students got an opportunity to interact with the shop-keepers in mall road and the local people in Shimla. They learned about the history of that place, the culture of the local people apart from understanding the uniqueness of the traditional products like- Shawls, Homedecoration items etc. which are available aplenty in the mall road market. This demonstrates the utility of understanding the cultural environment.

Students learnt that many exciting adventure and activity based outbound training and team building programs by certified outdoor instructors. The students experienced the natural bliss of the surroundings and the importance of being disciplined & cautious on such an adventurous activity

Mr.Bal Krishna Mishra

One Day Workshop on Cloud Computing

Tecnia Institute of Advanced Studies organized a workshop on 4th March ,2021 by Mr. Ashish Raj, Creerera, Noida, for the Students of BCA 1st, BCA 4th and MCA 5th Semester. The workshop was divided into module and sub modules are: 1. Introduction to the Cloud Computing 2. E2C Experience 3. Dashboard and Events 4. Billing and cost management dashboard 5. AWS Management Control 6. Amazon S3 - Buckets .The workshop started with a welcome speech by Dr. Deepak Sonker, H.O.D of BCA department. In his welcome speech, he asked students to remain focused and to put their constant efforts to achieve excellence, learn new innovative things and discussed the significance of Cloud Computing. It was followed by the introduction speech of Mr. Deepanker Malik on Cloud Computing. He discussed the benefits of Cloud Computing. The workshop was then carried forward by Mr. Ashish Raj (speaker). He explained the importance of Cloud Computing with the help of a diagram. He shared his experience and discussed the different platforms available for being a cloud computing expert. He explained the different types of cloud computing platforms. He also demonstrated the working of E2C Experience dashboard. He then explained the billing and cost management by an example and by coding as well. He also told about AWS Management Console, Cloud Front Distributions and Buckets. In the end of the workshop, there was a question-answer round held where the students clarified their doubts regarding Cloud Computing also Mr. Deepanker Malik and Mr. Ashish Raj asked few questions related to the topic.

Dr.Deepak Sonker

जल संरक्षण पर निर्णायक कदम उठाने होंगे

बिन पानी सब सून.... इन शब्दों की गंभीरता को समझना होगा! अगर नहीं समझे तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार भी रहें? बेपानी के कुछ ताजा उदाहरण हमारे सामने हैं। गाजियाबाद में दो दिन पहले दूषित पानी पीने से एक साथ सौ बच्चे बीमार पड़ गए। ऐसी घटनाओं की हम लगातार अनदेखी करते जा रहे हैं। जिन जगहों पर पानी की कभी बहुतायता होती थी, जैसे तराई के क्षेत्र, वहां की जमीन भी धीरे–धीरे बंजर हो रही है। नमीयुक्त तराई क्षेत्र में कभी एकाध फिट के निचले भाग में पानी दिखता था, वहां का जलस्तर कइयों फिट नीचे खिसक गया है। राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में पानी का जलस्तर तो पाताल में समा ही गया है।

किसी को कोई परवाह नहीं, सरकारें आ रही हैं और चली जा रही हैं। कागजों में योजनाएं बनती हैं और विश्व जल दिवस जैसे विशेष दिनों पर पानी सहेजने को लंबे–चौड़े भाषण होते हैं और अगले दिन ही सबकुछ भुला दिया जाता है। इस प्रवृत्ति से बाहर निकलना होगा और गंभीरता से पानी को बचाने के लिए मंथन करना होगा, तभी समस्या का निदान होगा। वरना, वह कहावत कभी भी चरितार्थ हो सकती है जो बेपानी पर कही गई है। कहावत है "रहिमन पानी राखिए, पानी बिन सब सून, पानी गये ना उबरे, मोती मानस सून"। पानी बचाने और उसे सहजने को जो कुछ साधन हुआ भी करते थे, वह सब चौपट हो गए हैं। बात ज्यादा पुरानी नहीं है। कोई एकाध दशक पहले तक छोटे–छोटे गांवों में नदी–नाले, नहर, पौखर और तालाब अनायास ही दिखाई पड़ते थे, वह अब नदारद हैं।

गंव वाले उन जगहों को पाटकर खेती किसानी करने लगे हैं। एक जमाना था जब बारिश हो जाने पर गांववासी उन स्थानों का जलमग्न का दृश्य देखा करते थे। गांव के गांव एकत्र हो जाया करते थे। पर, अब ऐसे दृश्य दूर–दूर तक नहीं दिखते। जल संरक्षण के सभी देशी जुगाड़ कहे जाने वाले ताल–तलैया, कुएं, पौखर सबके सब गायब हैं। कुछेक बचे हैं तो वह पानी के लिए तरसते हैं, सूखे पड़े हैं। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि बीते दस सालों में देशभर में करीब दस पंद्रह हजार नदियां गायब हो गई हैं। करीब इतने ही छोटे–बड़े नालों का पानी सूख गया है, जो अब सिर्फ बारिश के दिनों में ही गुलजार होते हैं।

नदी–तालाबों के सूखने से बेजुबान जानवरों और पक्षियों को भारी नुकसान हुआ है। कहा जाता है ग्रामीण क्षेत्रों में अब दुर्लभ पक्षी दिखाई नहीं पड़ते, लेकिन उनके न रहने के मूल कारणों की नब्ज कोई नहीं पकड़ता। ऐसे पक्षी बिना पानी के चलते बेमौत मरे हैं। कालांतर से लेकर प्राचीन काल तक दिखाई देने वाले पक्षी बिना पानी के ही मौत के मुंह में समाए हैं। ऐसी प्रजातियों के खत्म होने का दूसरा कोई कारण नहीं है, पानी का खत्म होना है। ध्यान भटकाने के लिए भले ही कोई कुछ भी दलीलें दे। पक्षियों की भांति अब इंसान भी साफ पानी नहीं मिलने से मरने लगे हैं। विश्व में कई सारे देश ऐसे हैं, जहां पीने का स्वच्छ जल न होने के कारण लोग जीवन त्याग रहे हैं। स्वच्छ जल संरक्षण और इस समस्या का समाधान खोजने के लिए ही विश्व जल दिवस पर हम सबको प्रण लेना होगा।

ये तय है कि पानी संरक्षण का काम सिर्फ सरकारों पर छोड़ देने से समस्या का समाधान नहीं होगा। सामाजिक स्तर पर भी चेतना हम सबको मिलकर जगानी होगी। इस मुहिम में सरकार से ज्यादा आमजन अपनी भूमिका निभा सकेंगे। जल भंडारण की स्थिति पर निगरानी रखने वाले केंद्रीय जल आयोग की हालिया रिपोर्ट बताती है कि मानसून के मौसम में भी देश के तकरीबन जलाशय सूख गए। इससे साफ है कि वर्षाजल को एकत्र करने की बातें भी कागजी हैं। वर्षा का पानी भी अगर हम बचा लें तो संभावित खतरों से बचे रहेंगे। लेकिन बात वहीं आकर रूक जाती है कि बिल्ली के गले में घंटी बांधे कौन?

याद आता है, वर्षा जल संरक्षण के लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने अभियान भी चलाया था, जो बाद में बेअसर साबित हुआ। यूं कहें कि जल संचयन और जलाशयों को भरने के तरीकों को आजमाने की परवाह उस दौरान ईमादारी से किसी से नहीं की। समूचे भारत में 76 विशालकाय और प्रमुख जलाशय हैं जिनकी बदहाली चिंतित करती है। इन जल भंडारण की स्थिति पर निगरानी रखने वाले केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट रोंगटे खड़ी करती है। रिपोर्ट के मुताबिक एकाध जलाशयों को छोड़कर बाकी सभी मरणासन्न स्थिति में हैं। उत्तर प्रदेश के माताटीला बांध व रिहन्द, मध्य प्रदेश के गांधी सागर व तवा, झारखंड के तेनूघाट, मेथन, पंचेतहित व कोनार, महाराष्ट्र के कोयना, ईसापुर, येलदरी व ऊपरी तापी, राजस्थान का राण प्रताप सागर, कर्नाटक का वाणी विलास सागर,ओडिशा का रेंगाली, तमिलनाडु का शोलायार, त्रिपुरा का गुमटी और पश्चिम बंगाल के मयुराक्षी व कंग्साबती जलाशय सूखने के एकदम कगार पर हैं।

गौरतलब है कि पूर्ववर्ती सरकारों ने इन जलाशयों से बिजली बनाने की भी योजना बनाई थी, जो कागजों में ही सिमट कर रह गई। योजना के तहत थोड़ा बहुत काम आगे बढ़ा भी था जिनमें चार जलाशय ऐसे हैं जो पानी की कमी के कारण लक्ष्य से भी कम विद्युत उत्पादन कर पाए। सोचने वाली बात है जब पर्याप्त मात्रा में पानी ही नहीं होगा, बिजली कहां से उत्पन्न होगी। तब जलाशयों को बनाने के शायद दो मकसद थे। अव्वल– वर्षा जल को एकत्र करना, दूसरा– जलसंकट की समस्याओं से मुकाबला करना। इनका निर्माण सिंचाई, विद्युत और पेयजल की सुविधा के लिए हजारों एकड़ वन और सैंकड़ों बस्तियों को उजाड़ कर किया गया था, मगर वह सभी सरकार की लापरवाही के चलते बेपानी हो गए हैं।

केंद्रीय जल आयोग ने इन तालाबों में जल उपलब्धता के जो ताजा आंकड़े दिए हैं, उनसे साफ जाहिर होता है कि आने वाले समय में पानी और बिजली की भयावह स्थिति होगी। इन आंकड़ों से यह साबित होता है कि जल आपूर्ति विशालकाय जलाशयों (बांध) की बजाए जल प्रबंधन के लघु और पारंपरिक उपायों से ही संभव है, न कि जंगल और बस्तियां उजाड़कर। बड़े बांधों के अस्तित्व में आने से एक ओर तो जल के अक्षय स्रोत को एक छोर से दूसरे छोर तक प्रवाहित रखने वाली नदियों का वर्चस्व खतरे में पड़ गया है। पानी की जितनी कमी होती जाएगी, बिजली का उत्पादन भी कम होता जाएगा। इसलिए समय की दरकार यही है, पानी को बचाने के लिए जनजागरण और बड़े स्तर पर प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। इस काम में ईमानदारी से सभी को आहूति देनी होगी। जीवन किसी एक का नहीं, बल्कि सभी का बचेगा। नहीं तो गाजियाबाद जैसी खबरें आम हो जाएंगी, जहां गंदा पानी पीने से बच्चे बीमार पड़ गए। पानी के लिए अगला विश्व युद्ध न हो, इसके लिए हमें सचेत होना होगा।

रोहित रावत

THIS MONTH

August 19, 1991 - Soviet hard-line Communists staged a coup, temporarily removing Mikhail Gorbachev from power. The coup failed within 72 hours as democratic reformer Boris Yeltsin rallied the Russian people. Yeltsin then became the leading power in the country. The Communist Party was soon banned and by December the Soviet Union itself disintegrated.

•••

August 19, 1934 - In Germany, a plebiscite was held in which 89.9 percent of German voters approved granting Chancellor Adolf Hitler additional powers, including the office of president.

•••

August 17, 1998- Bill Clinton became the first sitting President to give testimony before a grand jury in which he, the President, was the focus of the investigation. This resulted from a sweeping investigation of the President by Independent Counsel Ken Starr as well as a private lawsuit concerning alleged sexual harassment by Clinton before he became President. In the evening, President Clinton appeared on national television and gave a speech admitting he had engaged in an improper relationship with former White House intern Monica Lewinsky. The admission occurred several months after a much publicized denial.

Compilation:
Aditi Shukla

BASICS OF MEDIA

Control Room. A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions

•••

Master Control . Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material.

•••

Broadband: A high-bandwidth standard for sending information (voice, data, video, and audio) simultaneously over fiber-optic cables

•••

Grayscale: A scale indicating intermediate steps from TV white to TV black. Usually measured with a nine- or seven-step scale.

•••

Demographics: Audience research factors concerned with such data as age, gender, marital status, and income.

•••

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Parul Arora

संपादक की कलम से

लोगो ने ढिलाई बरतनी शुरू कर दी इसलिए फिर ताकतवर होता जा रहा है कोरोना

लोगों ने ढिलाई बरतनी शुरू कर दी इसलिए फिर ताकतवर होता जा रहा है कोरोना एक साल बाद एक बार फिर मार्च का महीना कोरोना महामारी के बढ़ते मामलों से डराने लगा है। मार्च के महीने का पहला पखवाड़ा गंभीर चेतावनी लेकर आया है। ठीक एक साल पहले मार्च, 2020 में देश में कोविड–19 के चलते लॉकडाउन का दौर चला था। कोरोना के कारण लंबे समय तक प्रभावित हालातों के बाद पिछले दो तीन महीनों से लगने लगा था कि अब देश में हालात पटरी पर आने लगे हैं पर मार्च आते–आते जिस तरह से कोरोना पॉजिटिव के मामले बढ़ते जा रहे हैं वह एक बार फिर चिंता का कारण बनता जा रहा है। पिछले 12 सप्ताहों में नए केसों में भारी बढ़ोतरी देखी गई है। सबसे खराब स्थिति महाराष्ट्र में देखी जा रही है तो मौत के मामलों में पंजाब डरा रहा है। महाराष्ट्र में कुछ स्थानों पर रात का कर्फ्यू तो कुछ स्थानों पर लॉकडाउन भी किया गया है। दुनिया के कुछ देशों में कोरोना की तीसरी लहर की बात होने लगी है।यह तो तब है जब दुनिया के देशों में कोरोना वैक्सीनेशन में हमारा देश पहले तीन देशों में शुमार हो गया है। कोरोना वैक्सीनेशन में राजस्थान समूचे देश में शीर्ष पर है तो महाराष्ट्र में भी वैक्सीनेशन की स्थिति अच्छी है। इस सबके बावजूद जिस तेजी से महाराष्ट्र सहित दस राज्यों में कोरोना पॉजिटिव के मामले सामने आ रहे हैं उससे चिंता की लकीरें उभर आई हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गंभीरता से लेते हुए उच्च स्तरीय बैठक में समीक्षा की है और राज्यों के मुख्यमंत्रियों से चर्चा कर नई रणनीति बनाई है तो राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए एक्शन मोड में आ गए हैं। प्रभावित राज्यों से आने वाले नागरिकों के टेस्ट के निर्देश दे दिए हैं। हालांकि लगभग सभी राज्य सतर्क होने लगे हैं।

दरअसल लोगों में कोरोना के प्रति गंभीरता कम हुई है। बाजारों में हालात कोरोना से पहले की तरह हो गए हैं तो शादी–विवाह व जलसों का सिलसिला निकल पड़ा है। इस दौरान कई राज्यों में स्थानीय निकायों के चुनावों सहित राजनीतिक गतिविधियां भी तेज हुई हैं। बंगाल, आसाम, केरल सहित कई प्रदेशों में विधानसभा चुनाव की भेरी बज चुकी है और इन प्रदेशों में राजनीतिक रैलियां हो रही हैं। इसके साथ ही किसान आंदोलन के चलते धरना प्रदर्शन और राज्यों की विधानसभाओं के बजट सत्र के चलते विधानसभाओं पर प्रदर्शन का सिलसिला जारी है। सार्वजनिक वाहनों ही क्या एक तरह से कोरोना प्रोटोकाल की पालना लगभग नहीं के बराबर होने लगी है। हाथ धोने, सेनेटाइजर का प्रयोग, दो गज की दूरी, मास्क लगाने आदि में अब औपचारिकता मात्र रह जाने से स्थितियां गंभीर होने की चेतावनी साफ हो गई है। यहां तक कि लोग वैक्सीनेशन को भी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं।

कोरोना की वापसी के संकेत डरावने हो गए हैं। बड़ी मुश्किल से पटरी पर लौटती दिनचर्या पर कोरोना की मार भारी पड़ने वाली है। सरकार की भी अपनी सीमाएं हैं। कोरोना के कारण प्रभावित आर्थिक गतिविधियों को लॉकडाउन के माध्यम से बंद करना अब सरकारों के लिए किसी दुश्वारी से कम नहीं है। आखिर रोजगार व आर्थिक गतिविधियों को बनाए रखना चुनौती भरा है। डिमाण्ड और सप्लाई की चौन जैसे तैसे कुछ सुधरी है पर नए हालातों से यह प्रभावित होनी ही है। ऐसे में सरकार से ज्यादा जिम्मेदारी अब आम नागरिकों की हो जाती है। कोरोना का वैक्सीनेशन का काम पूरा नहीं हो जाता है तब तक के लिए सार्वजनिक आयोजनों के लिए तो सरकार को अनुमति देने पर सख्त पाबंदी ही लगा देनी चाहिए

सरकारों व आमजन को यह समझना होगा कि कोरोना के चलते लॉकडाउन ही केवल मात्र विकल्प नहीं हो सकता। आखिर लॉकडाउन के हालात आए ही क्यों, लोगों को स्वयं को भी जिम्मेदार होना होगा। सामाजिक दायित्व निभाने के लिए आगे आना होगा। नाम कमाने के लिए छुटभैया नेताओं की गतिविधियों पर रोक लगानी होगी। यदि कोरोना प्रोटोकाल की पालना घर से ही शुरू की जाए और समझाइस से लोगों को प्रेरित किया जाए तभी समाधान संभव है। नहीं तो कोरोना के नाम पर मुफ्त सामग्री के वितरण और फोटो खिंचाकर सोशल मीडिया पर डालने से कोई हल नहीं निकल सकता। हमें नहीं भूलना चाहिए कि आर्थिक गतिविधियां ठप्प होने से कितने युवा बेरोजगार हुए हैं तो कितनों के वेतन में कटौती हुई है। बेरोजगारी के चलते या आय के स्रोत प्रभावित होने से कितने ही लोगों ने जीवन लीला समाप्त की है तो कितनों के ही हालात प्रभावित हुए हैं। ऐसे में सरकार से अधिक अब आम आदमी और सामाजिक व गैर–सरकारी संगठनों का दायित्व अधिक हो जाता है। सरकार को भी ऐसा रास्ता निकालना होगा जिससे गतिविधियां ठप्प नहीं हों क्योंकि इसका दंश अर्थव्यवस्था भुगत चुकी है। ऐसे में नो मास्क नो एन्ट्री के स्लोगन लगाने की नहीं इसकी सख्ती से पालना की आवश्यकता हो जाती है। नहीं तो आने वाला कोरोना का दौर और भी अधिक भयावह होगा यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

नंदीग्राम चुनाव; ममता के खिलाफ चुनाव लड़ रहे शुभेंदु अधिकारी के लिये राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई

नंदीग्राम (पश्चिम बंगाल)। पश्चिम बंगाल की चर्चित नंदीग्राम सीट पर भाजपा उम्मीदवार शुभेंदु अधिकारी अपने राजनीतिक अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए उन तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी से मुकाबला कर रहे हैं जिनको 14 साल पहले जबरन कृषि भूमि अधिग्रहण के खिलाफ रक्त रंजित संघर्ष में उन्होंने भरपूर सहयोग दिया था। पूर्वी मेदिनीपुर जिले के इस कृषि प्रधान क्षेत्र ने पश्चिम बंगाल में साढ़े तीन दशक तक सत्ता पर काबिज रहे वाम मोर्चे के सिंहासन को हिला कर रख दिया था। इस संघर्ष की पृष्ठभूमि में मिले लाभ के कारण 2011 में तृणमूल सत्ता में आई थीं। अब यह क्षेत्र दीदी (ममता बनर्जी) और दादा (अधिकारी) के बीच बंटा हुआ दिखाई दे रहा है। नंदीग्राम के चुनाव को इस बार केवल राजनीतिक लड़ाई के तौर पर ही नहीं बल्कि नंदीग्राम आंदोलन की विरासत के दावेदारों के बीच मुकाबले के तौर पर भी देखा जा रहा है। तृणमूल का साथ छोड़ भाजपा में शामिल हुए अधिकारी कहते हैं, मैंने अपने जीवन में कई मुश्किल चुनौतियों का सामना किया है। मैं इस बार भी कामयाबी हासिल करूंगा। मैं किसी से डरता नहीं हूं और सच बोलने से भी नहीं डरता। अधिकारी (50) ने नंदीग्राम में प्रचार अभियान के दौरान कहा, मैं नंदीग्राम के लिये लड़ रहा हूं। बंगाल के लोगों के लिये लड़ रहा हूं। अधिकारी के लिये नंदीग्राम का चुनाव राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई बन गया है क्योंकि इस चुनाव में हार उनके लिये तगड़ा झटका होगा। साथ ही नयी पार्टी भाजपा में उनके राजनीतिक भविष्यपर भी सवालिया निशान लग जाएगा। वहीं, जीत मिलने की सूरत में वहन केवल बंगाल में खुद को भाजपा के सबसे बड़े नेता के तौर पर स्थापित करने में कामयाब होंगे बल्कि राज्य में पार्टी की जीत होने पर वह मुख्यमंत्री की कुर्सी के भी काफी करीब पहुंच सकते हैं। अधिकारी ने बड़ी ही तेजी से अपनी छवि भूमि अधिग्रहण आंदोलन के समावेशी नेता से बदलकर हिंदुत्व के पैरोकार वाले नेता के रूप में कर ली है। अब वह दावा कर रहे हैं कि अगर वह चुनाव हारते हैं तो तृणमूल नंदीग्राम को मिनी पाकिस्तान बना देगी। हाल ही में तृणमूल छोड़ भाजपा में आए शुभेंदु के पिता शिशिर अधिकारी कहते हैं, ममता ने शुभेंदु का राजनीतिक करियर खत्म करने के लिये उनके खिलाफ चुनाव लड़ने का फैसला किया क्योंकि वह उनके भतीजे (अभिषेक बनर्जी) के लिये चुनौती बनकर उभरे थे। लेकिन हमें नंदीग्राम की जनता पर पूरा भरोसा है। यह न केवल शुभेंदुबल्कि हमारे पूरे परिवार के राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई है। अधिकारी के छोटे भाई दिव्येंदु भी तृणमूल के असंतुष्ट सांसद हैं। अपने बचपन के वर्षों में आरएसएस की शाखा में प्रशिक्षण पाने वाले अधिकारी ने 1980के दशक में छात्र राजनीतिक में कदम रखा जब उन्हें कांग्रेस की छात्र इकाई छात्र परिषद का सदस्य बनाया गया। वह 1995 में चुनावी राजनीति में उतरे और कोनताई नगरपालिका में पार्षद चुने गए। अधिकारी चुनाव राजनीति से अधिक संगठन में दिलचस्पी रखते थे। अधिकारी और उनके पिता 1999 में तृणमूल में शामिल हो गए। उस समय तृणमूल के गठन को एक साल ही हुआ था। इसके बाद वह 2001 और 2004 में लोकसभा चुनाव लड़े और दोनों ही चुनावों में उन्हें नाकामी हाथ लगी। हालांकि 2006 में हुए विधानसभा चुनाव में उन्हें कोनताई सीट से जीत हासिल हुई। साल 2007 में नंदीग्राम में हुए कृषि भूमि अधिग्रहण विरोधी आंदोलन ने बंगाल की राजनीति की पूरी तस्वीर ही बदल दी। इस आंदोलन ने अधिकारी को तृणमूल के चोटी के नेताओं की कतार में लाकर खड़ा कर दिया। बनर्जी और अधिकारी को नंदीग्राम आंदोलन का नायक बताया गया। इससे तृणमूल की सियासी जमीन मजबूत हुई। अधिकारी को जल्द ही तृणमूल की कोर ग्रुप का सदस्य बनाया गया। साथ ही तृणमूल की युवा इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 2009 और 2014 के लोकसभा चुनाव में तामलुक सीट से उन्हें जीत हासिल हुई। सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलन की सफलता पर सवार होकर बनर्जी ने 2011 के विधानसभा चुनाव में जबरदस्त जीत हासिल की। तृणमूल में कई लोगों को मानना है कि ममता के बाद सबसे लोकप्रिय नेता अधिकारी उनके उत्तराधिकारी होते। हालांकि ममता ने कुछ और ही तय कर रखा था। दोनों नेताओं के बीच मतभेद के बीज उस समय पड़े जब 21 जुलाई 2011 के सत्ता में आने के बाद तृणमूल की पहली वार्षिक शहीद दिवस रैली में बनर्जी ने अपने भतीजे अभिषेक के राजनीति में आने की घोषणा की। महज 24 साल के अभिषेक को तृणमूल की युवा इकाई के समानांतर संगठन ऑल इंडिया युवा तृणमूल कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया गया, जिसकी अगुवाई अधिकारी कर रहे थे। ममता के इस फैसले से अधिकारी स्तब्ध रह गए क्योंकि पार्टी के संविधान में दो युवा इकाई होने का प्रावधान नहीं था। इसके बाद से दोनों नेताओं के रिश्ते खराब होते चले गए। नतीजा यह हुआ कि अधिकारी ने इस साल की शुरुआत में तृणमूल छोड़ने की घोषणा कर दी।

आतिश कुमार

Green Holi

Tecnia Institute of Advanced Studies organized Poster Making Competition on "Green Holi" on 19th & 20th March, 2021 In order to promote the thought to educate the masses about climate and environment issues. The competition helped youth to express their views and thoughts about various environmental issues and remedies to eradicate. The posters & Poetry made by students described the effect of harmful chemical used in Holi colors etc. In this competition, total 50 students have participated. The winners were awarded with certificates of achievement as token of love. The event concluded with a happening and cheerful remark. It was a tough competition amongst different department. The event was a big success in less time and limited resources.

Kavya Swaroop-BA(J&MC)

Priyanshi Jain-(BCA)

Ayushi Badoni-(BBA)

Anandita-(BCA)

Sania Kukkar

Vol. 16 **No. 3**
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Bal krishna Mishra & Rahul Mittal responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen; Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Anamika Pandey

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**